श्री महावीर जिन पूजन

स्थापना

(नरेन्द्र छंद)

महावीर प्रभु दर्श दिखाना, दर्शन करने आया।
हृदय विराजो अतिवीर प्रभो, पूजनकरने आया।।
चरण शरण में अरजी लाया, निज सम मुझे बनाना।
प्रभु कृपा कर कष्ट मिटाकर, सरे बंध छुड़ाना।।1।।
शक्ति नहीं है मुझमें भगवन्, अनंत शक्ती देना।
तव गुणगण को जान सकूँ प्रभु, इतनी भक्ती देना।।
कर्म शत्रु के नाश हेतु प्रभु, नाम आपका ध्याऊँ।
ज्ञान वेदी पर वीर प्रभु को, सविनय आज बिठाऊँ।।2।।
ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

द्रव्यार्पण

(तर्ज- माता तू दया करके...)

श्रद्धा की वापी से, भक्ति जल भर लाय।
समकित कलश लेकर, प्रभु चरण शरण आया।।
आनंद रस छलका दो, जग दाह मिटे स्वामी।
प्रभु वीर दरश देना, शरणा दो अभिरामी।।1।।
ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय जन्म जरामृत्युविनाशनाय जलं...।
चंदन से अति शीतल, प्रभु की पद रज धूलि।
नहीं चरणन स्पर्श किये, यह भारी भूल हुई।।
प्रभु शांति जल देना, भवताप मिटे स्वामी।
प्रभु वीर दरशदेना, शरणा दो अभिरामी।।2।।
ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।
क्षणभुगंर वैभव है, भव का वर्द्धन करता।
मैं राग किया करता, प्रतिपल उलझा रहता।।
प्रभु अक्ष अगोचर हो, अक्षय पद दो स्वामी।
प्रभु वीर दरश देना, शरणा दो अभिरामी।।3।।
ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।
जग मान सरोवर में, शत दल सुरभित होता।
रस में फँसकर मधुकर, नित प्राण गँवा देता।।
प्रभु पद पंकज अलि बन, गुण गान करूँ स्वामी।
प्रभु वीर दरशदेना, शरणा दो अभिरामी।।4।।
ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।
इस कर्म असाता ने, चिरकाल सताया है।
जितना उपचार किया, तृष्णा को बढ़ाया है।।
निज दोष समझ आया, यह व्याधि हरो स्वामी।
प्रभु वीर दरश देना, शरणा दो अभिरामी।।5।।
ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।
मेरे चेतन गृह में घनघोर अँधेरा है।
नहीं सूझ रहा आतम, मिथ्यातम घेरा है।।
रत्नत्रय दीपजला, निज ज्ञान जगे स्वामी।
प्रभु वीर दरश देना, शरणा दो अभिरामी।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।
उपयोग भटकता है, कैसे निज में लाऊँ।
औरों को समझाऊँ, पर खुद न समझ पाऊः।।
प्रभु ध्यान धूप पाकर, सब कर्म नशें स्वामी।
प्रभु वीर दरश देना, शरणा दो अभिरामी।।7।।
ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।
कर्मों के फल खाकर, बेहोश हुआ जग में।
जब से प्रभु दर्श किया, निज दर्श हुआ निज में।।
चऊ गति के भ्रमण मिटा, शिव फल पाऊँ स्वामी।
प्रभु वीर दरश देना, शरणा दो अभिरामी।।8।।
ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।
पर को देखा मैंने, निज को ही ना परखा।
अब सुख अनंत पाने, संबंध तजूँ पर का।।
ज्ञायक पद पा जाऊँ, होशक्ति प्रगट स्वामी।
प्रभु वीर दरश देना, शरणा दो अभिरामी।।9।।
ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
पंचकल्याणक
(तर्ज- बाजे कुंडलपुर में बधाई....)
आषाढ़ सुदी छठ आई, कि स्वर्ग से जिन आये महावीर जी।
माँ प्रियकारिणी हर्षाई, कि गर्भ में प्रभु आयेमहावीर जी।।
हैं चौबीसवें तीर्थंकर, कि सुर नर गुण गाये महावीर जी।
माँ ने सोलह सपने देखे, कि त्रिपावन के नाथ पाये महावीर जी।।
बजे कुण्डलपुर में बधाई, कि गर्भ में वीर आये महावीर जी।।1।।
ॐ ह्रीं आषाढ़शुक्लषष्ठ्यां गर्भमंगलमंडिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
धन्य घड़ी जन्म की आई, कि ज्ञान धन बरसाये महावीर जी।
तिहुँ लोक में आनंद छाया, कि सुख की बाहर लाये महावीर जी।।
अभिषेक करे मेरु पर, कि क्षीर जल भर लाये महावीर जी।
हम जन्म कल्याणक मनाये, कि चैतसुदी तेरसआये महावीर जी।।
बजे कुण्डलपुर में बधाई, कि अँगना में वीर आये महवीर जी।।2।।
ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लत्रयोदश्यां जन्ममंगलमंडिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
मगसिर वदी दशमी आई, प्रभु वैराग्य हुआ महावीरा जी।
चंद्राभा पालकी लेकर, सुरपति वन आ गये महावीर जी।।
प्रभु! सिद्ध नमः कहते ही, जिन दीक्षा धारी जमहावीर जी।
हो गए स्वयंभू स्वामी, परम जग उपकारी महावीर जी।।
बाजे आतम में शहनाई, कि निज गृह वीर आये महावीर जी।3।।
ॐ ह्रीं मार्गशीर्षकृष्णदशम्यां तपोमंगलमंडिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
ऋजुकूल सरित तट तिष्ठे, वैशाख सुदि दशमी है महावीर जी।
प्रभु शुक्ल ध्यान के धारी, घाति चउ नाश किये हैं महावीर जी।।
हुई समवसरण शुभ रचना, भविक जन हितकारी महावीर जी।
बिन इच्छा ध्वनि खिरी है, कि प्रभु की अमृतवाणी महावीर जी।।
बाजे समवशरण शहनाई, कि गगन में वीर आये महावीर जी।।4।।
ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लदशम्यां केवलज्ञानप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
जब कार्तिक अमावस आई, कि दीपावली आई महावीर जी।
घड़ी स्वाति नखत की आई, कि प्रभु मुक्ति पाई महावीर जी।।
प्रभु पूर्ण परम पद पाये, कि अष्टम भू पाये महावीर जी।

सब जयबोले धरती पर, कब निर्वाण पाये, महावीर जी।।
बाजे आत्म नगर शहनाई, कि वीर प्रभु मोख पाये महावीर जी।।5।।
ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णाअमावस्यायां मोक्षमंगलमंडिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य

'ॐ ह्रीं अर्हं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय नमो नमः।'

जयमाला

दोहा

बाल ब्रह्मचारी प्रभु, महावीर जिननाथ।
गुण वर्णन कैसे कहूँ, अतः धरूँ पद माथ।।1।।

(तर्ज– स्रग्विणी छंद)

जय महावीर अतिवीर पद को नमूँ।
सन्मति नाथदाता सुवीर नमूँ।।
वंदना मैं करूँ वीर तीर्थंकरा।
आ गया हूँ शरण दीजिये आसरा।।2।।
वर्द्धमानेश सिद्धार्थ सुत को नमूँ।
मात त्रिशला के नंदन को मन से नमूँ।।
वंदना मैं करूँ वीर तीर्थंकरा।
आ गया हूँ शरण दीजिये आसरा।।3।।
है पुरुरवासे जीवन कहानी शुरू।
भव धरे अनगिनत कैसे गिनती करूँ।।
वंदना मैं करूँ वीर तीर्थंकरा।
आ गया हूँ शरण दीजिये आसरा।।4।।
पुण्योदय से भरत सुत मारीचि हुये।
भाव मिथ्यात्व के वश भटकते रहे।
वंदना मैं करूँ वीर तीर्थंकरा।
आ गया हूँ शरण दीजिये आसरा।।5।।
बनबये अर्ध चक्री त्रिपृष्ठ पती।
भव ी◌ा◌्रमण ही किया नहीं सुधरी मति।।
वंदना मैं करूँ वीर तीर्थंकरा।
आ गया हूँ शरण दीजिये आसरा।।6।।
भाव अज्ञान में कर्म बंधन किया।
चार गति में रुला क्रूर सिंह बन गया।।
वंदना मैं करूँ वीर तीर्थंकरा।
आ गया हूँ शरण दीजिये आसरा।।7।।
पुण्यसे ऋद्धि चारण मुनि मिलगये।
देशना पाके अश्रु नयन भर गये।।
वंदना मैं करूँ वीर तीर्थंकरा।
आ गया हूँ शरण दीजिये आसरा।।8।।
मिथ्यातम हट कया दीप सम्यक् जला।
श्री गुरु की शरण से ही बंधन टला।।
वंदना मैं करूँ वीर तीर्थंकरा।
आ गया हूँ शरण दीजिये आसरा।।9।।
फिर प्रथम स्वर्ग में सिंहकेतु हुये।
देव फिर विद्याधर से मुनिव्रत लिये।।
वंदना मैं करूँ वीर तीर्थंकरा।

आ गया हूँ शरण दीजिये आसरा।।10।।
स्वर्ग सप्तम से राजा हरिषेण हुये।
फिर महाशुक्र से राजपुत्र हुये।।
वंदना मैं करूँ वीर तीर्थंकरा।
आ गया हूँ शरण दीजिये आसरा।।11।।
स्वर्ग द्वादश गये नंद राजा हुये।
दीक्षा लेकर तीर्थंकर की सत्ता लिये।।
वंदना मैं करूँ वीर तीर्थंकरा।
आ गया हूँ शरण दीजिये आसरा।।12।।
सोलवें स्वर्ग से माँ को सपने दिये।
माता त्रिशला के नैन सितारे हुये।।
वंदना मैं करूँ वीर तीर्थंकरा।
आ गया हूँ शरण दीजिये आसरा।।13।।
धन की वृद्धि से श्री वर्द्धमान हुये।
मेरु पर्वत दबाया तो वीर हुये।।
वंदना मैं करूँ वीर तीर्थंकरा।
आ गया हूँ शरण दीजिये आसरा।।14।।
मुनि संजय विजय मन में शंकित हुये।
देखकरबाल जिन को निःशंकित हुये।।
वंदना मैं करूँ वीर तीर्थंकरा।
आ गया हूँ शरण दीजिये आसरा।।15।।
सन्मति नाम तत्क्षण रखा मनिवरा।
दृष्टि सम्यक् करो हे मेरे महावीरा।।
वंदना मैं करूँ वीर तीर्थंकरा।
आ गया हूँ शरण दीजिये आसरा।।16।।
देव संगम परीक्षा को विषधरा बना।
उसके फण पर चढ़े नाथ ताली बजा।।
वंदना मैं करूँ वीर तीर्थंकरा।
आ गया हूँ शरण दीजिये आसरा।।17।।
धन्य हो वीर स्वामी चरण में नमा।
दास हूँ आपका मुझको कर दो क्षमा।।
वंदना मैं करूँ वीर तीर्थंकरा।
आ गया हूँ शरण दीजिये आसरा।।18।।
एक हाथी मदोन्मत अवश हो रहा।
वीर को देखकर शांत ही हो गया।।
वंदना मैं करूँ वीर तीर्थंकरा।
आ गया हूँ शरण दीजिये आसरा।।19।।
तब अतिवीर कहने लगे जन सभी।
पाँचही नाम सार्थक किये नाथजी।।
वंदना मैं करूँ वीर तीर्थंकरा।
आ गया हूँ शरण दीजिये आसरा।।20।।
तीस ही वर्ष में तप धरा आपने।
रुद्र का विघ्न जिनवर सहा आपने।।
वंदना मैं करूँ वीर तीर्थंकरा।
आ गया हूँ शरण दीजिये आसरा।।21।।

वर्ष बारह प्रभु मौन की साधना।
घातिया नष्ट हो ज्ञान केवल घना।।
वंदना मैं करूँ वीर तीर्थंकरा।
आ गया हूँ शरण दीजिये आसरा।।22।।
दिन छ्यासठ हुए देशना नाखिरे।
आये गौतम प्रभु पद में शीश धरे।।
वंदना मैं करूँ वीर तीर्थंकरा।
आ गया हूँ शरण दीजिये आसरा।।23।।
प्रभु वाणी खिरी जैसे फुलवा झरें।
भव्य जीवों के जिनवाणी कल्मष हरे।।
वंदना मैं करूँ वीर तीर्थंकरा।
आ गया हूँ शरण दीजिये आसरा।।24।।
तीस ही वर्ष प्रभु ने विहार किया।
आये पावापुरी योग रोध किया।।
वंदना मैं करूँ वीर तीर्थंकरा।
आ गया हूँ शरण दीजिये आसरा।।25।।
कर्म संपूर्ण को नाश कर सुख लिया।
मुक्तिकांता वरी लक्ष्य को पा लिया।।
वंदना मैं करूँ वीर तीर्थंकरा।
आ गया हूँ शरण दीजिये आसरा।।26।।
है परम पूज्य पावापुरी की धरा।
नाथ निर्वाण पाया है पुण्य धरा।।
वंदना मैं करूँ वीर तीर्थंकरा।
आ गया हूँ शरण दीजिये आसरा।।27।।
दीप माला हुई ज्ञानज्योति जली।
जैसे जन्मांध को रोशनी है मिली।।
वंदना मैं करूँ वीर तीर्थंकरा।
आ गया हूँ शरण दीजिये आसरा।।28।।
सारे जग में दीपाली मनाई गई।
मोक्षलक्ष्मी मिले भावना की गई।।
वंदना मैं करूँ वीर तीर्थंकरा।
आ गया हूँ शरण दीजिये आसरा।।29।।
आत्म गुण हेतु हे नाथ पूजा करूँ।
एक भव में ही मैं नाथ मुक्ति वरूँ।।
वंदना मैं करूँ वीर तीर्थंकरा।
आ गया हूँ शरण दीजिये आसरा।।30।।
ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घत्ता

अंतिम तीर्थेशा, वीर जिनेशा, भव-भव का संताप हरो।
नित पूज रचाऊँ, ध्यान लगाऊँ, 'विद्यासागर पूर्ण' हरो।।

।। इत्याशीर्वादः।।